नं० ५४९७ — घ

नागलीला हिन्दीकाव्यम्

पत्राणि ७

(संपूर्णम्)

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

५४१

नं० ५४९८-घ

नागलीला

(हिन्दी काव्य)

नं. १००६

पत्राणि ८ (सप्त) (संपूर्णम्)

१३५

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ॐ श्रीकृष्णायनमः ॥ अथनागलीला लेखइति ॥ ॐ गोविंदकेसऊसदजनमना ॥ जमनाजीउनरेप्रभुजायकेनागनागनीदोनोबैटेश्रीकृस्नजीएकेजायके ॥ १ ॥ कहतनागनी

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ना
१
स्तुतहूप्रभजी॥जाउरेबालकबाग
के॥तेरारूपदेषकैमैनुदयाआवै।
नहीनागमारीजागाकै॥२॥अवभा
गपाकैऊललाजआवैजोभागाहोगा
कैसेवनै॥ऊनीऊयसीहोगापद्मनी

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

तैरेनामसोविलखदे॥३॥कौरेलट-
केपंथभूल्योकावैरीवरमाययोका
तैरेमनमैक्रोधउपजा॥कौग्रहनार-
मैताइयो॥५॥नाहीरेपद्मनीपंथभू-
ल्योनावैरीवरमाइयो॥नामेरेमन

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ना मैक्रोधउपजनाग्रहनारसैंताइयौ || ५
२ ग्रहराराजाडुखीपरजादेखकैसबा
2 हियो || राजेकेंसहवादमेरोमैनागन
थवुआइयो || ८ || कहोंतुमारादेसबा
लककहोंतुमारायामहै || किसमा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ताजीकेबालककहीपकानमारा
नामहै॥ ७ ॥श्रीविंद्रावनमैदेमहमा
रागोकुलजीहमाराग्रामहै॥माता
न्नसोदाजीकेबालककहैपश्रीकृ
स्नजीहमारानामहै॥ ८ ॥लेजारील

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ना
१

डकेगलफूलमालालेजारितोल
षिवोरिश्रा॥इतनेलेकरगरजाऊ
बालकमैदिउगेनागसोचौरिया॥४
काकोगलफूलमालाकाकोल
षमूरियो॥श्रीविंद्रावनमेगाडवाजे

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

लातेरेनामकेमैकरोडेरियां॥९॥
इततेलेकरमरजाउरेवालकदि
वैगीनामभोचौरियां॥हयाकेकेंच
नकनांकेऊंडलसवांलावांदियां
मारियां॥१०॥नहीरिविप्रनहीभेवा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ना ऐश्रीनंदजीकेवालको॥मानाज
४ सोदादहीपरोलेनेतामोगेकालेना
५ गको॥१५॥चरणचपीघुमजामगोरी
नागनीनागजपगाइयो॥ऊंठरेउठ
बलवंतजोधे॥पकवालकावेलम

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नभ्राइयो ॥१४॥ उठज्यागपा मंडली
का राजा इंद्र जीय रनाइयो ॥ श्री राम
जी के मुकुट पर जा पठके ने ॥ श्री कृ
ष्ण जी मुकुट बचाइयो ॥१५॥ लडत।
मो के चौनठ बैठी नाग की फन मारि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ना
प

यो ॥ ह्राय बांय के करो विनती छ्ड तें
मेरे ह्याग को ॥ १५ ॥ गल वे च पल वा मैं
दा मी तेरी ॥ रावत मेरे ह्याग को ॥ का
ली मैली काली ना ग नथ ज मथुरा
मैं कंस पछारियो ॥ १६ ॥ हरि हर जन

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

जेगतस्वामीलंकामैरावनमारियो
द्रौपदाजीकेलाजराषीहयामाभ-
गतउधारियो॥१८॥अटलपदवीध्रो
वकदीनीप्रह्लादभगतउधारियो
गर्भकीयाचकवाचकवे॥रैनविक्रो

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ना डाकरडारियो॥१८॥येतनागर्भनाके
८ जियेपद्मनी॥जनगर्भकेयोहजार
6 यो॥गर्भकेयाचानहरज॥चौथेले
कपक्षारयो॥१९॥येतनागर्भनकेजि
येपद्मिनीजनगर्भकेयोहजारयो

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नागलीलाजु मैकहीयो स्रीकस्तुर
चितविचारियो ॥ २० ॥ इतिस्रीनागली-
लासमाप्तं ॥ ॥ ॥ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

१२२

१८०६ श्लोक

श्री रणवीर पुस्तकालय ... श्री रघुनाथ ...

१०६

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नं० ५४-६८-घ
नागलीला (हिन्दीकाव्य)
पत्राणि ८ (सप्त)
(संपूर्णम्)

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri